उपाय

(पुस्तक के कुछ अंश)

आज उनके घर में से रोने की आवाजे आ रही थी। मधु जोर जोर से चिल्ला रही थी । लूट गई बरबाद हो गई। आलीशान घर जिसके आगे बडी बडी कार खडी रहती थी आज सब आश्चर्य से उस घर को देख रहे थे। पूरी घटना को समझने के लिए 35 साल पहले के वातावरण में जाना होगा। कर्मपुर गांव जंहा हरियाली दिखाई देती थी। उसी गांव के जाने माने विद्‌वान थे पं, हरिशंकर शास्त्री । शास्त्रीजी का घर ठीक वैसा ही था जैसा उस वक्त गांव में हुआ करता था। मिटटी और गोबर से लिपा हुआ बडा सा घर जिसके बीच में खुला आंगन था। कहा जाता था कि उनकी गणना कर कही हुई बात कभी झूठ सिध्द नहीं होती थी। विवाह से लेकर नौकरी और बच्चे की जन्म की तारीख भी वो गणना कर बता देते थे। आगे............

आज उनके घर में से रोने की आवाजे आ रही थी। मधु जोर जोर से चिल्ला रही थी । लूट गई बरबाद हो गई। आलीशान घर जिसके आगे बडी बडी कार खडी रहती थी आज सब आश्चर्य से उस घर को देख रहे थे। पूरी घटना को समझने के लिए 35 साल पहले के वातावरण में जाना होगा। कर्मपुर गांव जंहा हरियाली दिखाई देती थी। उसी गांव के जाने माने विद्वान थे पं, हरिशंकर शास्त्री । शास्त्रीजी का घर ठीक वैसा ही था जैसा उस वक्त गांव में हुआ करता था। मिटटी और गोबर से लिपा हुआ बडा सा घर जिसके बीच में खुला आंगन था। कहा जाता था कि उनकी गणना कर कही हुई बात कभी झूठ सिघ्द नहीं होती थी। विवाह से लेकर नौकरी और बच्चे की जन्म की तारीख भी वो गणना कर बता देते थे। सच्चे ज्ञान को पैसों की चाह नहीं होती है। जो भी प्रेम से चढा देता वो उसे स्वीकार कर लेते। जीवन बहुत ही प्रेम से कट रहा था। चार बेटे और एक बेटी का भरापूरा परिवार खुशी खुशी रहता था। वक्त बीतने के साथ ही सारे बच्चों की शादी हो गई। जो भी लोग शास्त्रीजी से जुडे थे उन्होंने बहुत मदद की। तीनों बेटों की नौकरी भी लग गई। सबसे छोटा बेटा लाला बचपन से ही शरारती था। कभी तंबाकू खाता था तो कभी तीनों भाभीयों के बीच लडाई कराता। इसके अलावा उसे बडे भाई और भाभी के बीच लडाई कराके बडे भाई से पैसे लेने में भी मजा आता था। घर का कोई भी काम हो लाला कह देता मैं तो सबसे छोटा हूं मेरे पास क्या कमाई है आप जानो। लेकिन घर में सबसे ज्यादा पैसे ही लाला ने इकटठे किए हुए थे। लाला का जैसा स्वभाव था ठीक वैसी ही थी उसकी पत्नी मधु। मधु को भी लडाई कराने में महारत हासिल थी। कुए पर पानी भरने जाती और बातों ही बातों में पडोसियों के घरों में ऐसी लडाई करा देती कि घर टूटने तक की नौबत आ जाती। लेकिन लाला और मधु के संबंध हमेश अच्छे रहे वजह थी उनके एक जैेसे स्वभाव का होना। वक्त बीतता गया। लाला ने शहर में 4 मकान खरीद लिए। पिताजी के पास बैठकर शास्त्रों का अध्ययन तो नहीं किया पर कुछ उपाय रट लिए। एक दिन शास्त्री जी स्वर्ग सिधार गए। सब लोग क्रियाकर्म की तैयारी में लगे थे और लाला भागकर गया और तिजोरी में से धन लेकर मधु के पास रख आया। जब पैसों की बात आई तो लाला ने फिर रोना शुरू कर दिया मेरे पास तो पैसे नहीं मधु गर्भवती है। परिवार वाले लाला के स्वभाव से वाकिफ थे कुछ नहीं कहा। कुछ महिनों बाद लाला के बेटा हुआ नाम रखा देवेन्द्र। अपनी पत्नी मधु और बेटे देवेन्द्र के साथ लाला शहर में रहने के लिए आ गया। मगर गांव के घर जाना भी नहीं छोडा। वंहा शास्त्रीजी के अनुयायी को संकट से बचाने के उपाय, ग्रह शान्ति के नाम पर उपाय बताकर दक्षिणा लेने लगा। पिताजी के कुछ शिष्य शहर में भी आ गए थे उनके हाथ देखकर भी बताना शुरू कर दिया। धन की बरसात होने लगी। महल जैसा घर और उसमें सुख सुविधा के सब साधन जुटा लिए थे लाला ने। पंडित लाला नाम कुछ अजीब लगता इसलिए अपना नाम पंडित शंकर शास्त्री रख दिया। नाम और नंबर के बड़े बड़े बोर्ड लगवा दिए। लाला ने न्यूनतम फीस 2100 रू कर दी। रिश्ता करवाने का काम भी करने लगा। किसी के नाडी दोष बता 51000 का उपाय करवाना तो किसी के 1 लाख रूप्ये उपाय के नाम पर लेना । मधु पर भी शहर का रंग चढ

गया था। मधु का आधे से ज्यादा वक्त ब्यूटी पार्लर में बीतने लगा। सुन्दरता को ब्यूटी पार्लर की जरूरत नहीं होती ये बात मधु के समझ नहीं आ रही थी। 45 साल की उम्र में वो 21 साल की युवती से खुद की तुलना करने लगती थी। लेकिन लाला अपनी पत्नी के ब्यूटी पार्लर वाले रूप पर बहुत रीझे रहते। कभी किसी मंत्री या अफसर के घर पूजा के लिए जाते तो खुद भी क्रीम पाउडर लगा जाते। काले रंग पर सफेद पाउडर , इसपर पसीना आने के बाद वो अलग ही रंग बन जाता था। लाला अपने इसी रंग पर गर्व करते हुए उनके घर के अंदर घुसते। घर में मौजूद नौकर उनके इस तरह के रूप को देखकर उनके जाने के बाद हँसते रहते।

लाला हर संडे को फुटपाथ पर 2 रू में बिकने वाले मोती खरीद लाता और उन्हें संकट उतारने के नाम पर हाथ दिखाने आए लोगों को पन्द्रह हजार या बीस हजार में बेच देता। परेशान लोग भी यही समझते शंकरजी ने दिया है तो सही ही होगा। देवेन्द्र कॉलेज में आ गया था। लाखों रूप्ए की फीस देकर सहर के सबसे महंगे कॉलेज में दाखिला करवाया गया। महंगे कालेज में जाने के बाद देवेन्द्र की पढाई में तो फर्क नहीं पडा लेकिन वो शराब, सिगरेट और गर्लफ्रेंड जैसी बातें अच्छी तरह सीख गया। छोटे से कद का देवेन्द्र महंगी बाइक पर महंगे कपडे पहनकर उतरता तो खुद को फिल्म के हीरो से कम नहीं समझता। लंबे कद की खुबसूरत लडकिया भी उससे पैसे खर्च करवाने के लिए उसके साथ घूमती। उसे इस बात से भी बहुत गर्व महसूस होता था। लगातार तीन साल फेल होने पर जब एक दिन देवेन्द्र को लाला ने डांट दिया तो वो घर छोडकर मरने की बात लिखकर भाग गया। लाला और मधु घबरा गए सब रिश्तेदार इकठे हो गए। दो दिन बाद देवेन्द्र भूखा प्यासा घर लौट आया और माता पिता ने कसम ली की वो कभी देवेन्द्र को नहीं डाटेंगें उसका बहुत लाड किया गया। कुछ दिनों बाद लाला ने अपने चारों घर बेचकर करोंडो की रकम घर पर रख ली। वो अगले दिन शहर के सबसे पॉश इलाके में घर और गाडी लेने वाला था। रात को बाहर सिक्योरिटी गार्ड लगाकर पूरा परिवार सो गया। सुबह जब उठे तब घर में हाहाकार मचा हुआ था। करोडो रूप्ए और गहने घर से गायब थे पास में रखी थी देवेन्द्र की लिखी चिटठी आप दोनो ने फेल होने पर मुझे डांटा क्या पता थोडे दिनों में अपना वादा तोड दो। जिंदगी में पैसे हो तो सबकुछ होता है आप दोनो को पैसों का करना क्या है दो वक्त की रोटी खाओ और खुश रहो। मैं अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीने जा रहा हूं और अगर मेरे पीछे पुलिस लगाने की कोशिश करी तो पिताजी जो ब्लैकमनी को विदेश में भेजकर व्हाइट कराने का काम करते हैं उसकी सारी डिटेल्स पुलिस का दे दूंगा। मधु और लाला बस चिल्लाकर रोए जा रहे थे पूरी बात भी लोगों को बता नहीं पा रहे थे। सिक्योरिटी गार्ड की भी कोई गलती नही थी घर का सदस्य ही सुबह बैग लेकर जाए तो उसे कैसे रोका जा सकता है। मधु और लाला के आगे अब तक के सारे काले कारनामें घूम रहे थे। झूठ बोलकर, चोरी कर लोगो को अहित होने के नाम पर, डराकर धोखा देकर जो रूप्ये इकठे

किए थे उनका ही बेटा चुरा कर ले जा चुका था। बाहर खडे लोग तरह तरह की बातें कर रहे थे और कह रहे थे पं शंकर शा

स्त्री जी लोगांे का ही भला करते रहे कभी अपने घर का वास्तु सुधारकर बेटे को भी कोई अंगुठी पहना देते।